गुस्सा प्यार का हमारी सरकार का

सन्दीप कुमार, ५/३९८ गऊशाल रोड, फाजिलका

मैं पूज्य "जागनी रत्न" सरकार साहिब से क्षमा चाहूंगा कि यह लेख उन पर आधारित है मैं उनकी अनुमति लिए बिना लिख रहा हूं।

इन्सान की केवल दो आंखे होती है लेकिन दो आंखे कितना कुछ कार्य करती हैं यह बातें हमारे सामने हैं आंखे प्यार देती है, आंखे गुस्सा करती हैं, आंखे देखती हैं, आंखे बोलती हैं, आंखे सुनती है, आंखे इन्तजार करनी हैं, आंखे क्रोध करती हैं, आंखें नफरत करती हैं वगैरह-२। उसी तरह पूज्यनीय 'जागनी रत्न' सरकार साहिब का गुस्सा भी बहुत काम करता है उनके गुस्से से आश्रम में वो काम हो जाते हैं जो शायद उनके प्यार करने से नहीं होते या हो सकते। कइयों से सुनने को मिलता है कि हम इन्चोली आश्रम इसलिये नहीं जाते क्योंकि उनमें (सरकार साहिब) गुस्सा बहुत है बिना देखे और बिना इन्चोली के ये बात कहना कि उनमें गुस्सा बहुत है तो यह उतना ही असत्य है जितना किसी चमकती वस्तु को देख कर सूर्य समझ लेना मैं अपने समाज के अगुओ से पूछना चाहता हूं कि आज तक समाज ने उनको (सरकार साहिब) दिया ही क्या है सिवाय बदनामी और उलझनों के समाज के कुछ लोगों ने तो सुन्दर साथ से यही कहा कि उनकी चर्चा न सुनना वे सुन्दर साथ को गुमराह करते हैं आज वह (सरकार साहिब) जिस मुकाम पर है वहां तक पहुंचने में उनके सतगुरु श्री राम रत्न दास जी की कृपा है समाज ने उन्हें कुछ नहीं दिया लेकिन हां! कुछ तो जरूर दिया है उनके ऊपर झूठे आरोप और लाछन लगा कर उन पर कई तरह का कीचड़ उछालने की कोशिश की और कर भी रहे हैं लेकिन वह उनसे घबराये नहीं उल्टा उन झूठे आरोपों ने सही और सीधे रास्ते पर चलने की प्रेरणा दी आज जो उनकी स्थिति है या जो कुछ भी वह है समाज के ज्यादातर लोगों द्वारा बहिष्कार करने के बावजूद हैं आज इन्चोली आश्रम में आने वाले सुन्दर साथ को जो धर्म, परमधाम और धनी का ज्ञान है आखिर उनके पीछे किसका हाथ है कभी हमने विचारने की कोशिश की है बस एक बात को ही पकड़े हुए है कि उनमें गुस्सा बहुत है आज मैं प्रणामी बना हूं इसके पीछे भी उनका हाथ है क्योंकि पहले मैं राम को मानने वाला था आज श्री निजानन्द आश्रम इन्चोली में जो अनुशासन है कि भण्डारे पर सुबह पांच बजे मंगल आरती उसके बाद मंगल चाय जिसे हम लोग बेड टी कहते हैं सुबह साढ़े पांच बजे मेहर सागर की परिक्रमा जो पांच बार मेहर सागर का पाठ करके की जाती है उसमें सभी सुन्दर साथ परिक्रमा करते हैं सात बजे चाय नाश्ता होता है सुबह साढ़े सात बजे किरन्तन और चर्चा होती है

सवा ग्यारह दोपहर का भोजन होता है जो शायद हम घर पर भी इस समय तक तैयार नहीं कर पाते शाम को चार पाँच चाय और फिर साढ़े पाँच बजे मेहर सागर की परिक्रमा सुबह की तरह होती है शाम छः बजे संध्या आरती और रात साढ़े सात बजे रात्रि भोजन और रात को साढ़े आठ बजे रात्रि का मच होता है जिसमें किरन्तन भजन और आये हुये प्रवचन कर्ताओं द्वारा प्रवचन होते है और इन सब कुछ होने के बीच में १०८ अखण्ड परायण चलते रहते हैं आखिर वो किन के इशारों पर होता है केवल उनके और उनके बनाए नियमों से जो Army के बराबर अनुशासन होता है आखिर सब करते कौन है करते वो हैं जिनके दिलों में सरकार साहिब ने सेवा भाव कूट-२ कर भर रखा है आखिर सेवा करने वालों को भी तो उनमें (सरकार साहिब) कोई बात अच्छी लगी होगी कुछ देखा होगा कुछ उनसे लिया होगा जिससे सुन्दर साथ दिन रात सेवा करते रहते हैं और उन पर अपने आपको न्यौछावर करने को तैयार हैं क्या उनके लिए उनका गुस्सा कुछ नहीं है उनके लिए उनका गुस्सा ही प्यार है जिसे वह प्यार से स्वीकार करते हैं और अगले प्यार (दुबारा उनके गुस्से होना) की इन्तजार करते हैं।

क्या प्रणामी समाज को उनके गुस्से को आधार बना लेना और यह कहना कि वह (सरकार साहिब) देवी देवताओं की खण्डनी करते हैं मैं पूँछना चाहता हूँ कि यह कहाँ तक उचित है कि एक सच्चे और सही रास्ते पर चलने और दूसरों को सही और सच्चा रास्ता दिखाने वाले का समाज बहिष्कार कर दे हमारे समाज के कुछ अगुओं ने तो अपने शिष्यों को मना किया कि उनकी चर्चा मत सुनना अगर चर्चा सुनोगे तो दोजख में जाओगे वाह ! रे प्रणामी समाज अगर हम किसी को कुछ दे नहीं सकते तो उनसे लेना हम अपनी हेठी समझते हैं प्रणामी समाज सरकार साहिब को कुछ दे नहीं सका और अगर वह आज स्थान-२ पर जा कर धर्म का प्रचार कर रहे हैं और सुन्दर साथ कुछ लोगों के कहने से उनकी चर्चा नहीं सुनता तो सुन्दर साथ जी यह कहा कि रहनी है क्या कभी हमने सोचा कि दिन रात वह गाड़ियों और बसों में किस लिए घूमते फिरते हैं फक्त सुन्दर साथ के लिए, आत्माओं को जगाने के लिये आखिर उन्होंने हमसे कुछ लेना तो है नहीं और न ही हमारे साथ उनकी कोई दुनियावी रिश्तेदारी है सुन्दर साथ के लिये वह पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, दिल्ली, यू. पी., गुजरात और अन्य राज्यों में भी हर साल आते जाते रहते हैं उन्होंने सुन्दर साथ में वाणी का ज्ञान कूट-२ कर भर दिया है और इन्चोली का सुन्दर साथ वाणी से अपरिचित नहीं है एक बार पन्ना जी के श्री श्री १०८ श्री कृष्ण दास जी महाराज ने खुले मन्च पर कहा था कि इन्चोली के सुन्दर साथ से वाणी के बारे में बात करनी हो तो पहले अपने आपको वाणी से तोलो जो इन्चोली सुन्दर साथ को वाणी का इतना ज्ञान है आखिर किस के कारण है केवल सरकार साहिब के कारण अब सोचने की बात है कि अगर वो (सरकार) हमें गुस्से होते हैं तो उनके पीछे भी कोई कारण तो होगा ही नही तो उन्हें क्या जरूरत है हमें गुस्से होने की जहा तक मेरा विचार है वे गुस्से तब होते हैं जब आश्रम में कुछ सुन्दर साथ अनुशासन मे नही रहता जैसे चाय या रोटी की पंक्ति में देर से आना, रात को स्टेज के समय

सोना, चर्चा या मेहर सागर की परिक्रमा में इधर उधर घूमना इत्यादि वह सुन्दर साथ को उनके फायदे के लिए ही गुस्से होते हैं अगर वह गुस्से नहीं होंगे आज कुछ सुन्दर साथ अनुशासन को तोड़ता है तो कुछ सालों में ज्यादा माहोल ही वैसा हो जायेगा जो उन्हें किसी कीमत पर मन्जूर नहीं है क्योंकि उनका कहना है इस आश्रम की जान ही अनुशासन है जिस दिन अनुशासन टूट गया उस दिन आश्रम की जो पहचान सारे देश में है वह समाप्त हो जायेगी। अनुशासन और उसके बाद वाली चर्चा के लिए पूरे समाज में इन्चोली आश्रम का एक विशेष स्थान है और जहां तक मैं समझता हूं इस स्थान को बनाए रखने के लिए उनका गुस्सा बहुत जरूरी है क्योंकि उनके गुस्से से अनुशासन है इन्चोली आश्रम के लिए उनका गुस्सा एक अवगुण नहीं बल्कि एक गुण है जिसके सहारे श्री निजानन्द आश्रम इन्चोली आज यहां तक पहुंचने में सफल हुआ। मैं समाज के लोगों से पूछना चाहता हूं कि अगर उनके एक गुस्से के कारण इतना अनुशासन बना रहता है और इतनी जागनी हो रही है तो क्या उस गुस्से को गुस्सा कहना उचित है ? वह गुस्सा नहीं बल्कि प्यार है। इन्चोली आश्रम में आने वालों के लिए उनका गुस्सा ही प्यार है और वो ही इस आश्रम का आधार है क्या परिवार का मुखिया परिवार को सही ढंग से चलाने के लिए अपने बच्चों को गुस्से नहीं हो सकते ? क्या परिवार का मुखिया परिवार को अनुशासन में रहने के लिए नहीं कह सकता ? और अगर अनुशासन न हो तो वह उन्हें गुस्से या डांट नहीं सकता ? इसका जवाब हम देंगे कि वो गुस्से भी हो सकते हैं और डांट भी सकते हैं उसी प्रकार वह आश्रम के महाराज या गादी पति नहीं है बल्कि सेवा करने वालों के मुखिया के रूप में हैं (यह मेरे निजी विचार हैं ना कि इन्चोली आश्रम के) जो आश्रम का संचालन करते हैं और संचालन करने वालों का यह परम कर्तव्य है कि वह अपनी संस्था में अनुशासन को बनाए रखें अगर अनुशासन प्यार से कायम नहीं रहता तो थोड़ा गुस्सा आ जाना स्वाभाविक बात है लेकिन हम सुन्दर साथ उनकी चर्चा को सुन कर और उनके सेवा भाव को देख कर अमल नहीं करते बस एक बात को (गुस्सा) लेकर बात का बतंगड़ बना देते हैं आप दुनियां की बात ही ले लीजिए कि आपका बच्चा अगर प्यार से कोई बात नहीं मानता तो क्या आपको कभी गुस्सा नहीं आता अगर आपको एक छोटा सा बच्चा संभालने के लिए गुस्सा आ जाता है तो फिर उन्होंने तो पूरे आश्रम में आये हुये सुन्दर साथ को संभालना होता है। और अनुशासन उन्हें अपनी जान से भी प्यारा है सुन्दर साथ जी जो किसी के बहकावे में आकर या किसी धार्मिक मजबूरी के कारण इन्चोली आश्रम नहीं आ पाते हैं मैं उन्हें यही कहूंगा कि दूसरों की बातों में न आ कर एक बार भण्डारे पर इन्चोली आश्रम जरूर आएं फिर आपको सुनने और देखने में अन्तर का पता चल सकेगा कि वह (सरकार साहिब) गुस्से होते हैं या प्यार करते हैं उनका गुस्सा तो मेरे लिए प्यार और उनका आशीर्वाद है जो मैं आज आपके सामने कुछ लिखने के लायक हुआ हूं कोई गलती हो तो क्षमा चाहूंगा। यह मेरे निजी विचार हैं न कि किसी विशेष स्थान के।
